आलू और आलू

अनीता

बहुत पुराने ज़माने की बात है. दो देश थे - एक पूर्व में, और दूसरा पश्चिम में.
एक दिन दोनों देशों ने, एक-दूसरे के साथ युद्ध शुरू किया. फिर किसी के पास अपने खेतों, गायों या मुर्गियों की देखभाल करने का समय नहीं बचा.
और लड़ाई के दौरान लोगों ने अपना सारा समय तलवारें चमकाने, तोप के गोले बनाने और सैनिकों की वर्दियों पर बटन सिलने में बिताया.

इन दोनों देशों के बीच एक घाटी थी. वहां एक महिला रहती थी जिसे युद्ध से नफरत थी.
उसके दो बेटे थे.
उस महिला के पास एक गाय, कुछ मुर्गियां और आलू का एक बड़ा खेत था.
अपने आलू के खेत और बेटों को युद्ध से बचाने के लिए, महिला ने अपनी पूरी ज़मीन के चारों ओर एक दीवार बनाई.
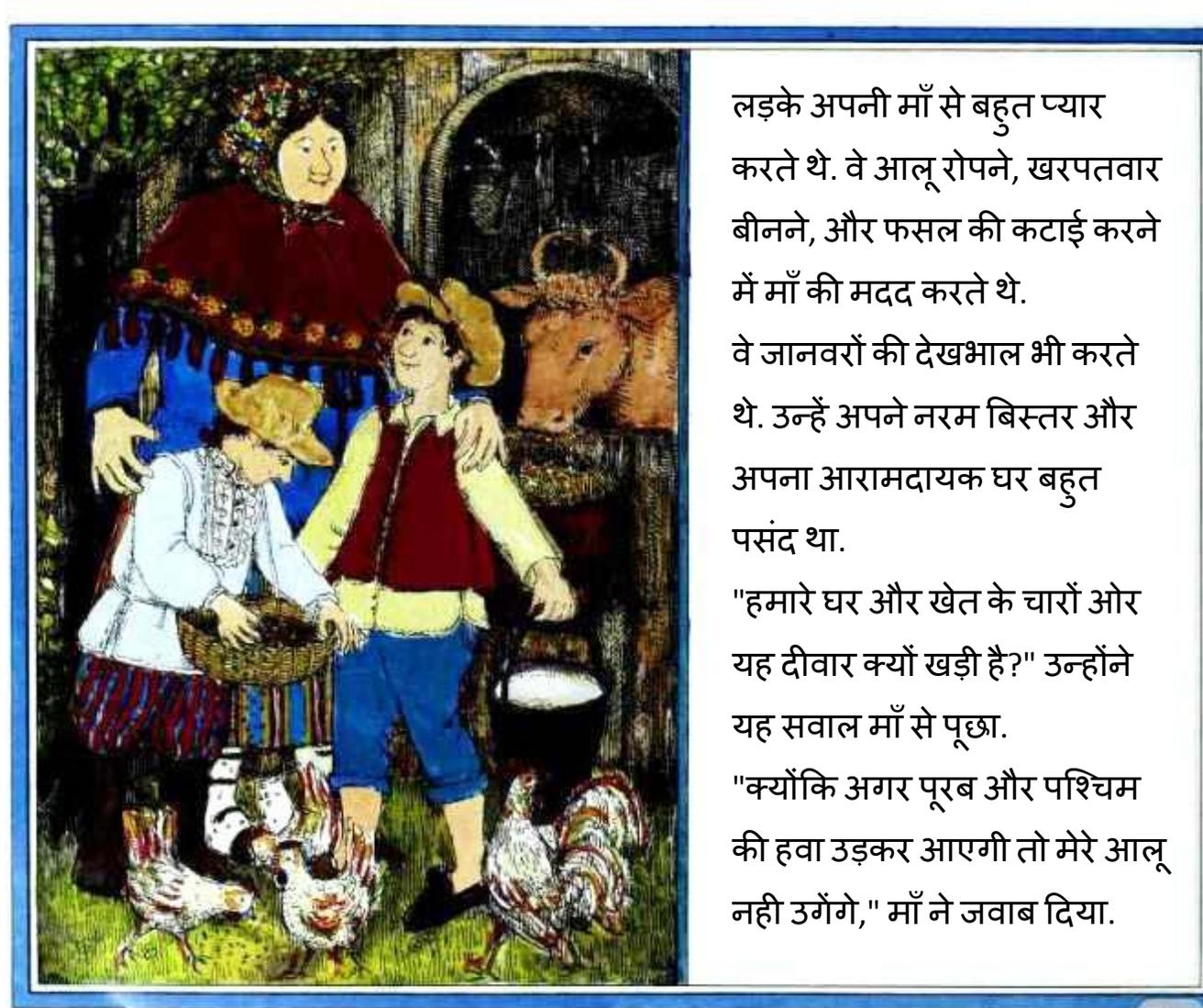
लड़के अपनी माँ से बहुत प्यार करते थे. वे आलू रोपने, खरपतवार बीनने, और फसल की कटाई करने में माँ की मदद करते थे.
वे जानवरों की देखभाल भी करते थे. उन्हें अपने नरम बिस्तर और अपना आरामदायक घर बहुत पसंद था.
"हमारे घर और खेत के चारों ओर यह दीवार क्यों खड़ी है?" उन्होंने यह सवाल माँ से पूछा.
"क्योंकि अगर पूरब और पश्चिम की हवा उड़कर आएगी तो मेरे आलू नही उगेंगे," माँ ने जवाब दिया.
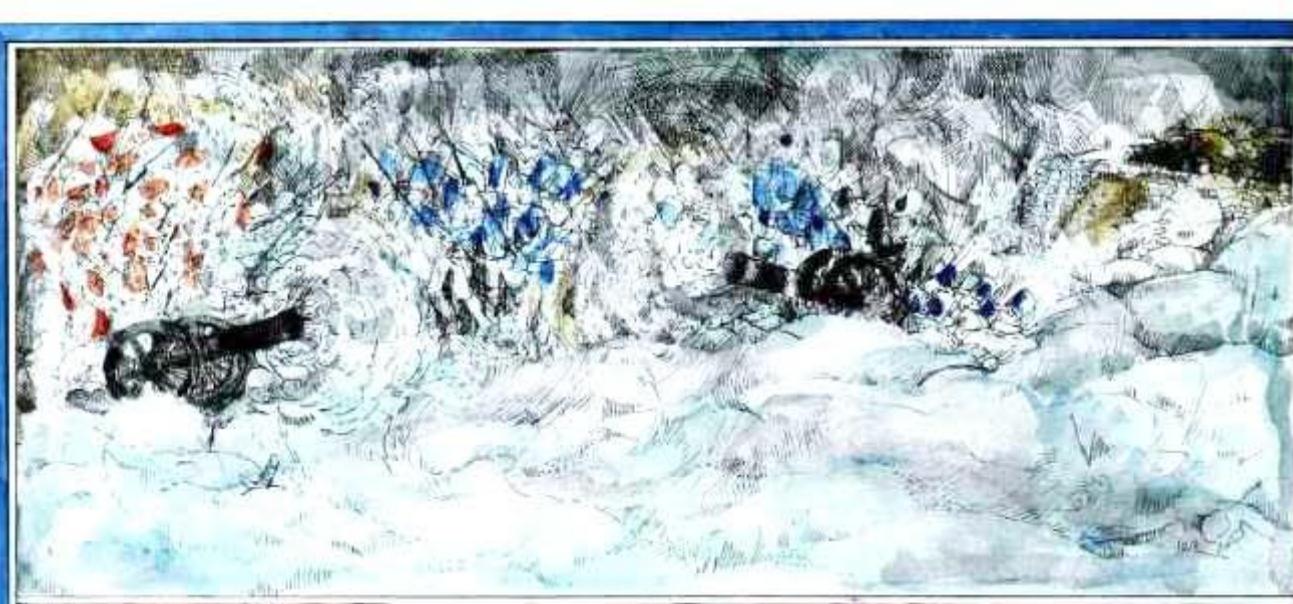
सर्दियों की ठंडी रातों में जब बाहर तूफ़ान आता और लड़ाइयाँ होतीं, तो पूरा परिवार आलुओं को आग में भून कर खाता.
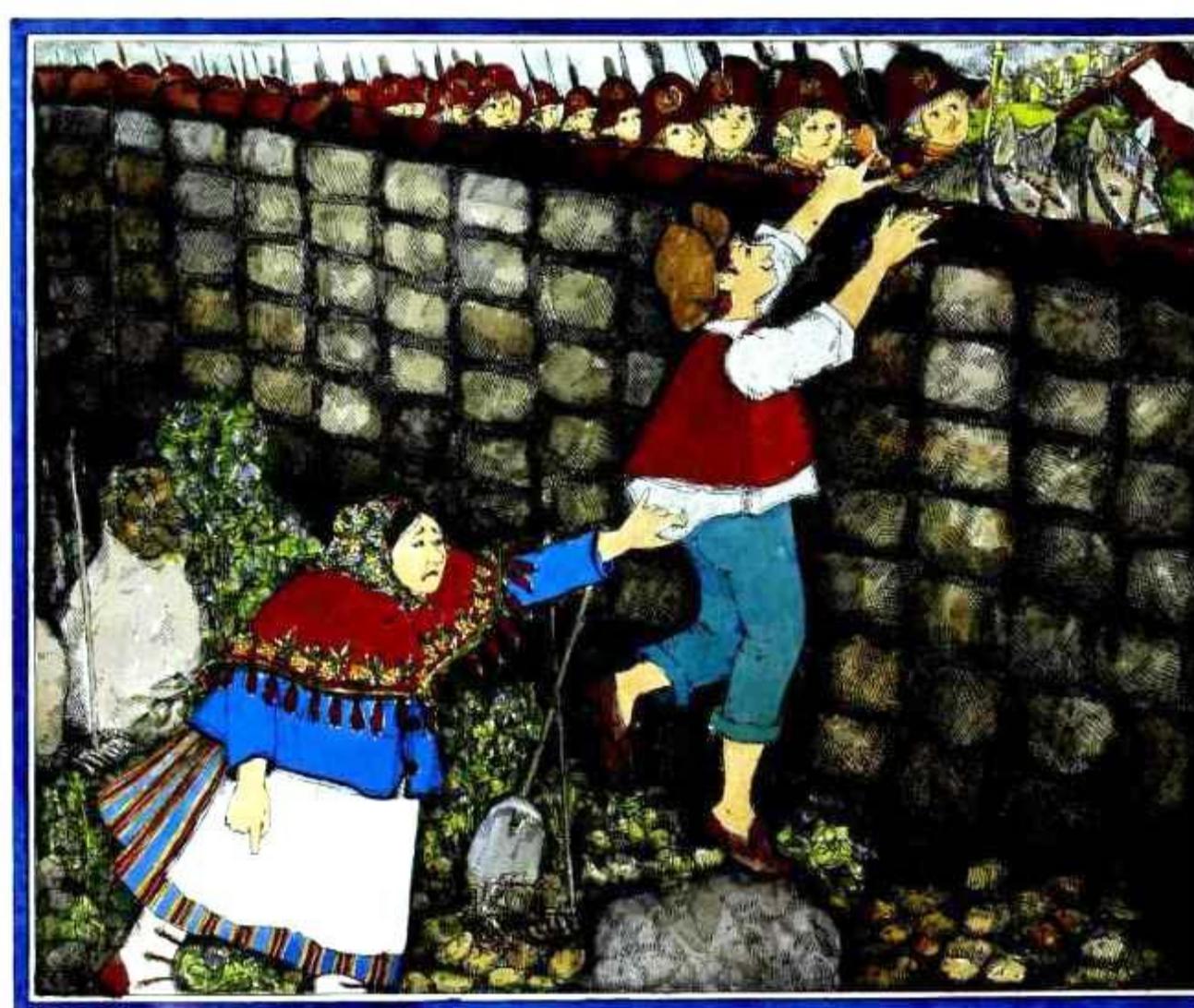
पर धीरे-धीरे महिला के दोनों बेटे बड़े हो गए.
एक दिन बड़े बेटे ने जब पूर्व की ओर देखा तो उसे
सैनिकों का एक रेजिमेंट लेफ्ट-राइट करते हुए दिखाई दिया.
"माँ, ज़रा उनकी लाल वर्दियों और सुंदर तलवारों को तो देखो,"
वो अपनी पीठ पर लदी आलू की बोरी को गिराते हुए चिल्लाया.
"मैंने तमाम फटी और मैली लाल वर्दियां और मुड़ी-टूटी हुई तलवारें देखी हैं," माँ ने जवाब दिया.
"कृपया, मुझे परेशान मत करो और अपना काम सही ढंग से करो!
आज रात हम उबले आलुओं के साथ खट्टी क्रीम खाएंगे."
"मैं आलू रोपते-रोपते बिल्कुल थक गया हूं," बड़े बेटे ने दुखी होते हुए कहा.
"गुड-बाय, माँ," और फिर बड़ा बेटा पूर्व की ओर भाग गया.

अगले दिन छोटे बेटे ने पश्चिम की ओर देखा. उसे भी सैनिकों की एक रेजिमेंट लेफ्ट-राइट करती हुए दिखाई दी.
"माँ, उनकी नीली वर्दी और चमकदार मैडल को तो देखो," वो अपने हाथ की कुदाल गिराते हुए चिल्लाया.
"मैंने फटी और खून से रंगी तमाम नीली वर्दियां देखी हैं, और खेतों में मेडल्स को जंग खाते हुए देखा है. तुम अब अपना काम करो," माँ ने छोटे बेटे को समझाया.
"मैं बाद में तुम्हारे लिए आलू के कुछ पेनकेक्स (चीले) बना दूँगी."
"मैं आलू के खेत की खरपतवार बीनते-बीनते थक गया हूँ," छोटे बेटे ने कहा.
"गुड-बाय, माँ," और फिर छोटा बेटा पश्चिम की ओर भाग गया.
उसके बाद महिला बिल्कुल अकेली रह गई.
फिर वो फूट-फूट कर रोने लगी.
फिर उसने अपने घर का दरवाजा बंद किया
और वापस आलू के खेत में काम करने चली गई.
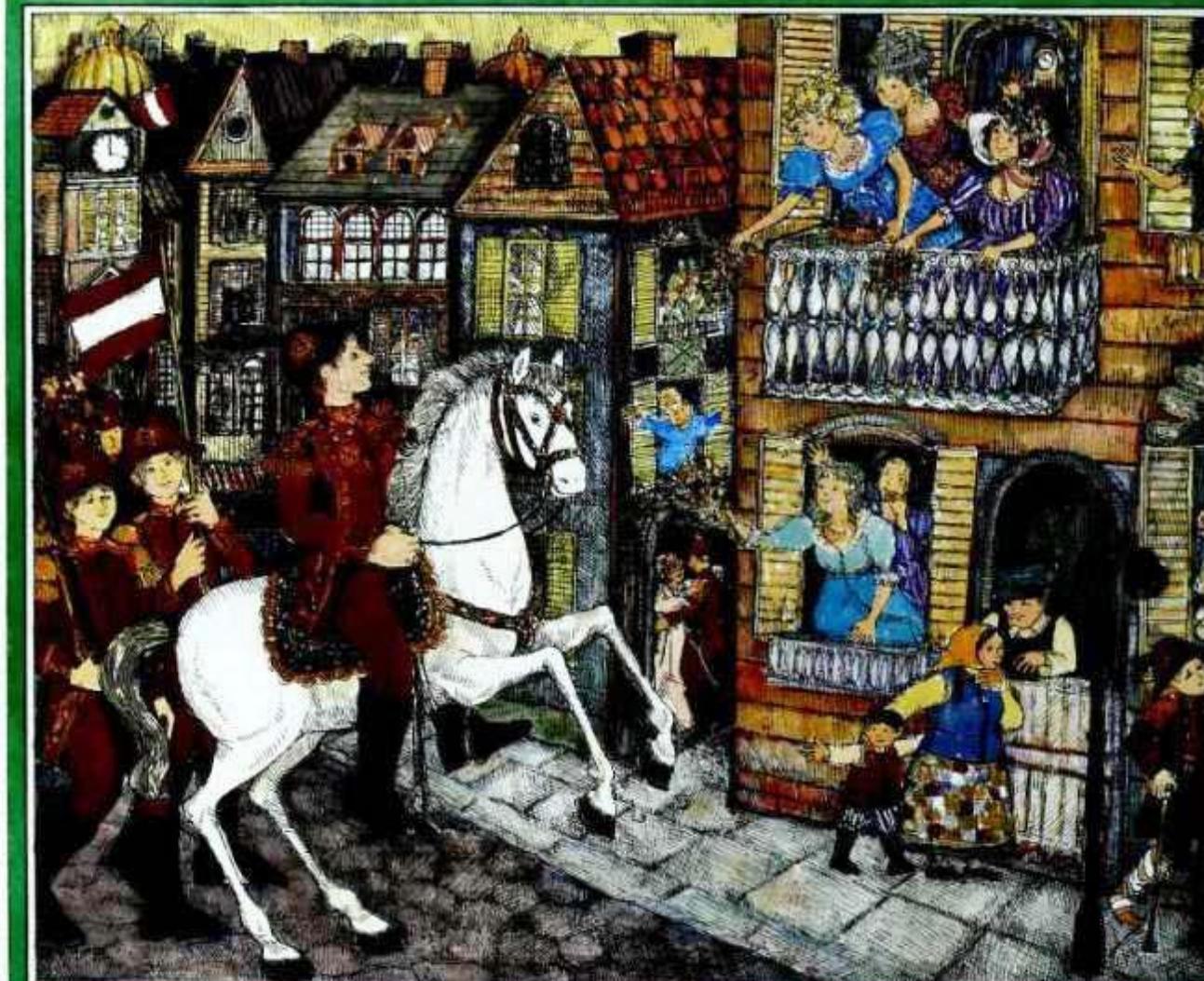
दोनों बेटों को सैनिक बनना पसंद था. उनकी वर्दियां एकदम नई और कलफ से कड़क थीं. उनकी तलवारें और मेडल्स धूप में चमक रहे थे. जब दोनों युवा सैनिक सड़क पर लेफ्ट-राइट करते तो उनके रास्ते के लड़कियां फूल बिखेरती थीं.

कुछ समय बाद एक बेटा पूर्व की सेना में जनरल बन गया, और दूसरा बेटा पश्चिम की सेना का कमांडर बन गया.
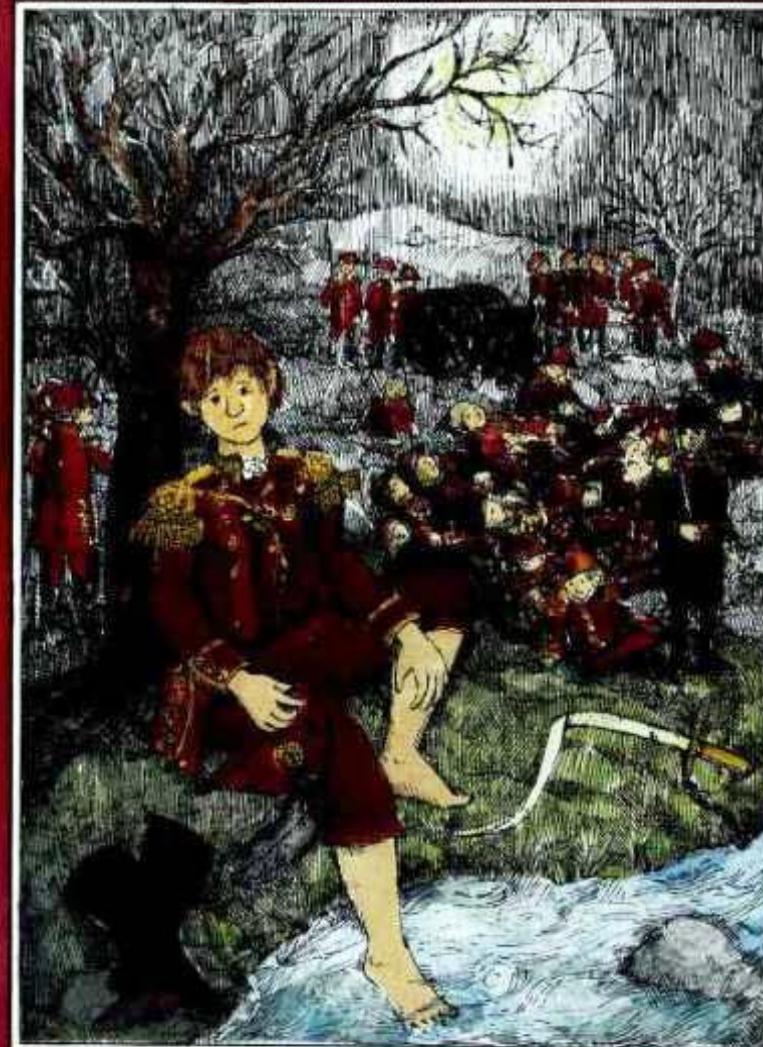
दोनों बेटों ने कई लड़ाइयाँ लड़ीं. लेकिन कभी-कभी लड़ाई ख़त्म होने के बाद जनरल ने अपनी गंदी वर्दी और मुड़ी हुई तलवार को भी देखा. तब उसे अपनी माँ के घर के पके हुए आलुओं और नरम बिस्तर की याद आई.

और कभी-कभी कमांडर ने खून के दागों से सनी अपनी वर्दी और जंग लगे मेडल्स को भी देखा. तब उसे भी माँ के घर के आलुओं और गर्म अलाव की याद आई. उसे अपनी माँ की बहुत याद आई और उसने खुद को दुखी महसूस किया.
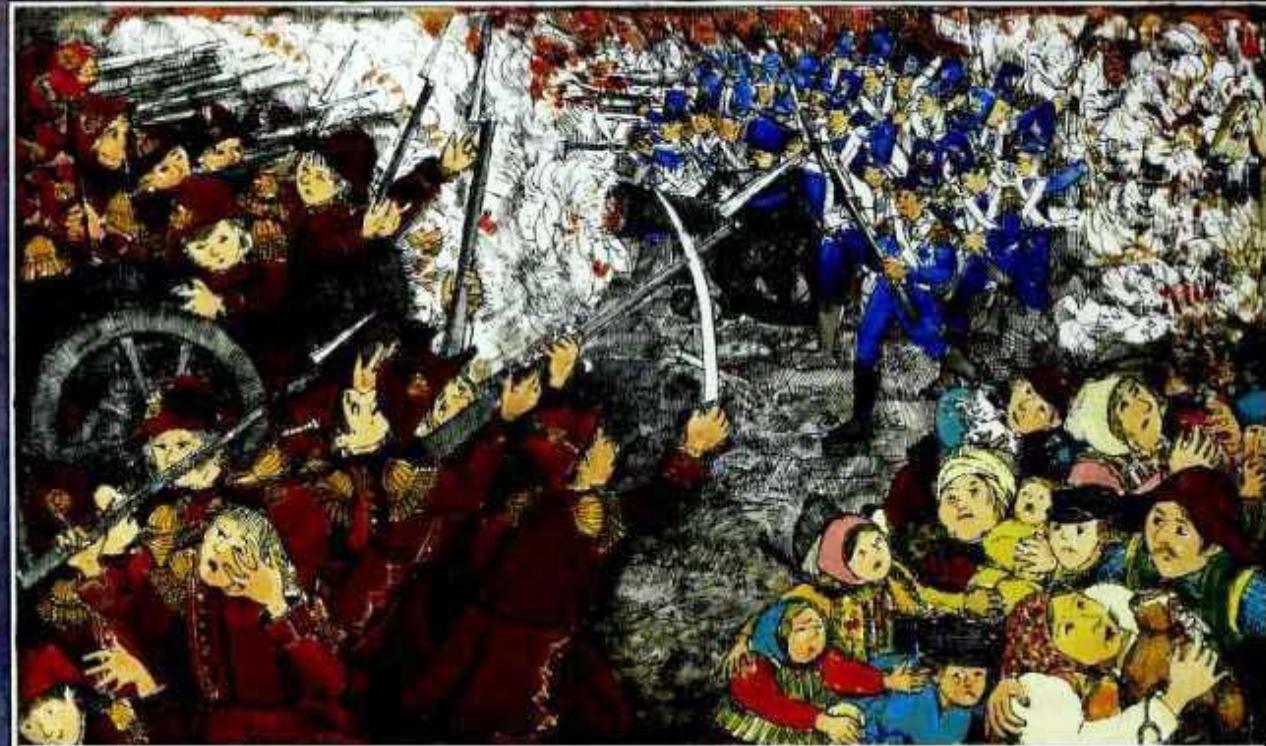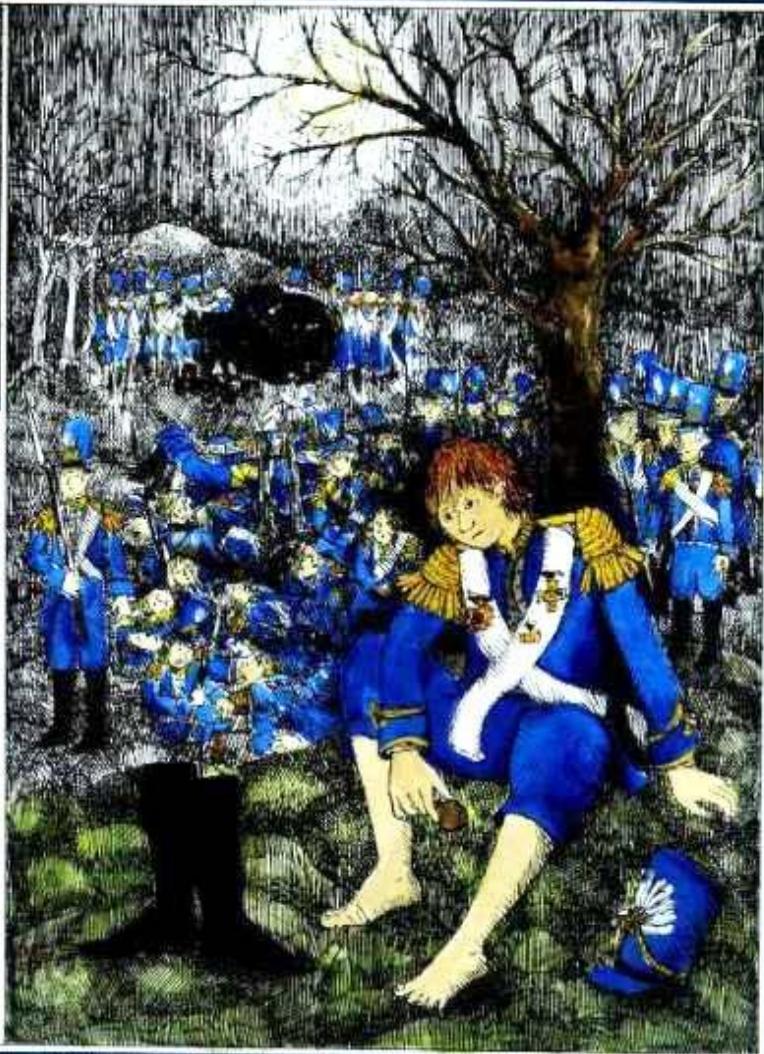
फिर और भी लड़ाइयाँ लड़ी गईं.
अब खेत बंजर हो गए थे और कुछ तो जलकर ख़ाक हो गए थे.
पूर्व और पश्चिम दोनों ओर अब खाने के लिए कुछ नहीं बचा था.
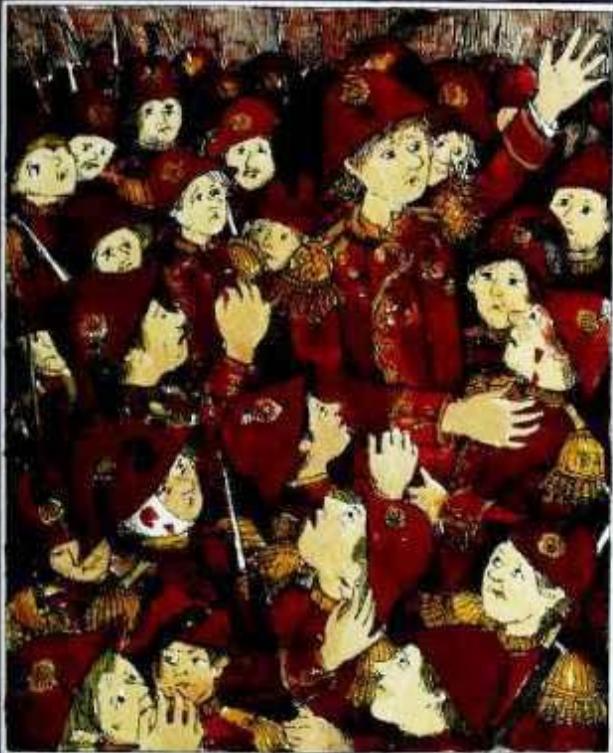
"हम भूखे हैं," पूर्व की सेना के सभी सैनिक चिल्लाए. उनका जनरल एक ऐसी जगह जानता था जहाँ खाना उपलब्ध था.

"हमें भोजन चाहिए," पश्चिम की सेना में सभी सैनिकों ने मांग की. उनका कमांडर भी एक ऐसी जगह जानता को था जहाँ खाना उपलब्ध था.

फिर एक रात दोनों सेनाएँ घाटी की ओर बढ़ीं

वो उस घाटी में पहुंचे जहां महिला और उसके आलू थे.
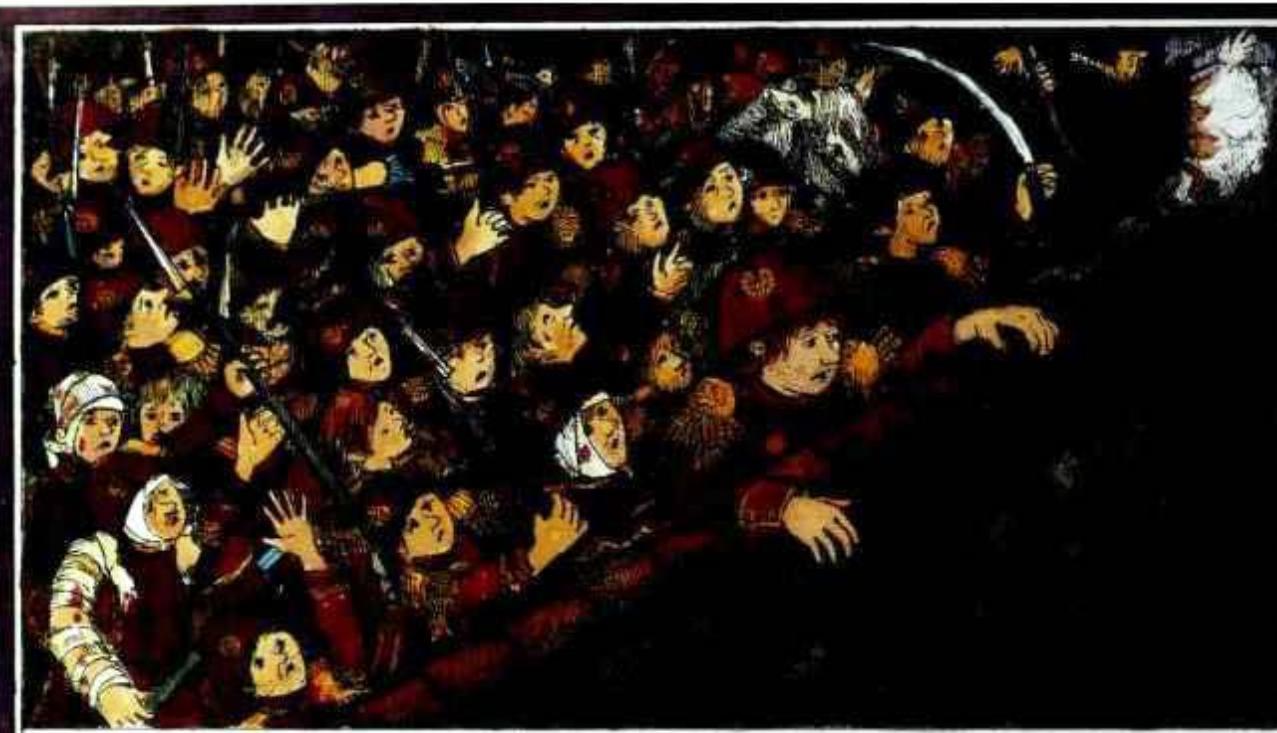
"माँ, मेरे सैनिकों को भूख लगी है," पूर्वी दीवार पर खड़े होकर बड़ा बेटा रोया. "लड़ाई जीतने के लिए हमें मजबूत होना चाहिए!"

"माँ, मेरे लोग भूख से एकदम व्याकुल हैं," पश्चिमी दीवार पर खड़े छोटे बेटे ने रोते हुए कहा. "कृपा हमें कुछ आलू दो, फिर हम लड़ाई में अपने दुश्मन के छक्के छुड़ा देंगे!"

पर दीवार के पीछे एक पथरीली खामोशी थी.

"आलू! आलू!" सैनिक ज़ोर-ज़ोर से चिल्लाए.

"चलो, हम दीवार को तोड़ें और फिर आलुओं पर कब्ज़ा करें!"
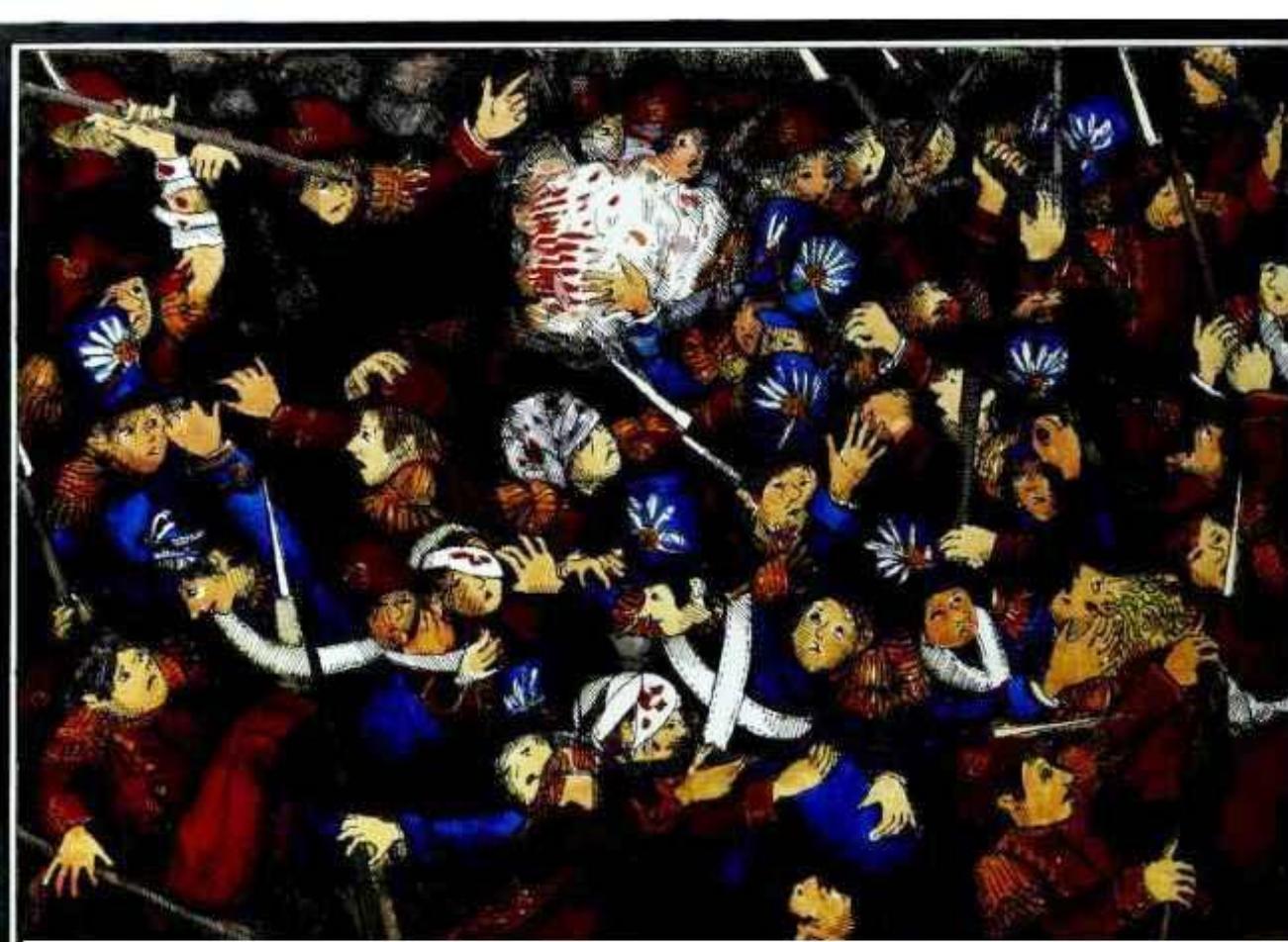
पूर्व और पश्चिम दोनों ओर की फौजें दीवार से टकराईं.

आलुओं के लिए एक भयानक लड़ाई शुरू हुई.

जल्द ही दीवार टूटकर नीचे गिर गई. घर खंडहर हो गया.

गाय और मुर्गियां भाग गईं.

सैनिकों ने खेत को पूरी तरह रौंद डाला.

लड़ाई के बाद कई सैनिक जमीन पर पड़े कराह रहे थे.

उनके जनरल और कमांडर भी घायल हो गए थे.

मलबे के बड़े ढेर के पीछे एक महिला बिना हिले जमीन पर अधमरी पड़ी थी.

जनरल और कमांडर ने अपनी मां को, ध्वस्त मकान को और सारी तबाही को देखा.

यह सब देखकर वे रोने लगे.

"माँ, माँ, यह सब हमारी ही गलती है!" बड़े बेटे ने रोते हुए कहा.
"हमने यह क्या किया?" छोटा बेटा भी रोया.
"हमसे बोलो! हमसे कुछ तो बोलो माँ!" उन्होंने भीख मांगी.

लड़ाई बंद हो गई थी, और अब सैनिक एकदम शांत खड़े थे. सैनिकों ने रोते हुए जनरल को देखा. उन्होंने रोते हुए कमांडर को देखा. सभी सैनिकों ने अपनी मां के बारे में सोचा. और फिर सभी सैनिक भी रोने लगे.

लेकिन वो महिला मरी नहीं थी.

उसने सभी सैनिकों को थोड़ी देर रोने दिया. फिर महिला ने अपनी आँखें खोलीं, और उसने खड़े होकर कहा: "भले ही तुमने मेरा घर और मेरे खेत बर्बाद करे हों. फिर भी, मेरे तहखाने में तुम सभी को खिलाने के लिए पर्याप्त आलू बचे हैं. लेकिन इससे पहले कि मैं तुम्हें अपने आलुओं का एक भी छिलका दूं, तुम सबको मुझसे एक वादा करना होगा. सभी को लड़ाई बंद करके इस गंदगी और तबाही को साफ़ करना होगा. उसके बाद तुम सभी को अपने-अपने घर अपनी मांओं के पास वापिस जाना होगा."

"हम लड़ते-लड़ते बहुत थक चुके हैं और हम बहुत भूखे हैं. आप जो कहेंगी हम वही करेंगे!"

"पर पहले आप हमें खाने को कुछ आलू दें!"

"अरे माँ! इस युद्ध में तुम्हारी मौत हो सकती थी!" कमांडर ने कहा.

"हम बहुत खुश हैं कि तुम ज़िंदा हो हैं!" जनरल ने कहा.

"हमें माफ करें!" दोनों भाइयों ने अपनी माँ से कहा.

"आलुओं के लिए हुर्रे और माँ के लिए हुर्रे!" आलू खाने के बाद और बेहतर महसूस करने के बाद सभी सैनिक एक साथ चिल्लाए.

फिर सैनिक वे गीत गाने लगे जो बचपन में कभी उनकी माताओं ने उन्हें सिखाए थे. जल्द ही उनके गीतों को पूर्व और पश्चिम, दोनों दिशाओं में सुना जा सकता था.
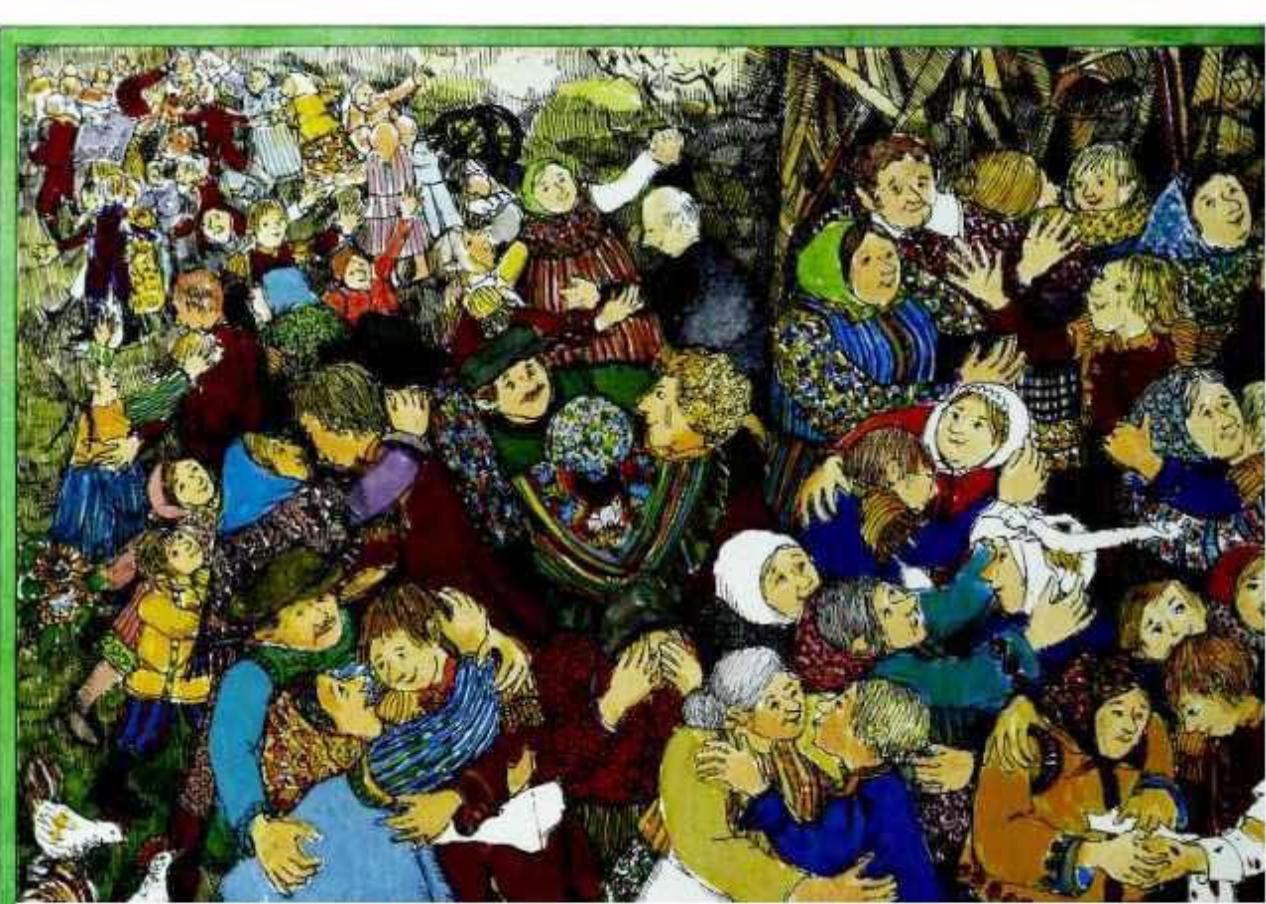
बेटों की घर वापसी के बाद माताओं की ख़ुशी का कोई ठिकाना नहीं रहा. हर जगह मां-बेटे एक-दूसरे से गले मिले. फिर उन्होंने मिलकर आलू वाली महिला को धन्यवाद दिया.

सैनिक पूर्व और पश्चिम दोनों दिशाओं में अपने-अपने घर गए. सैनिकों ने फौज की अपनी वर्दियां उतार कर फेंक दीं. उन्होंने लोगों से तलवारें और तोपें बनाना बंद करने को कहा.
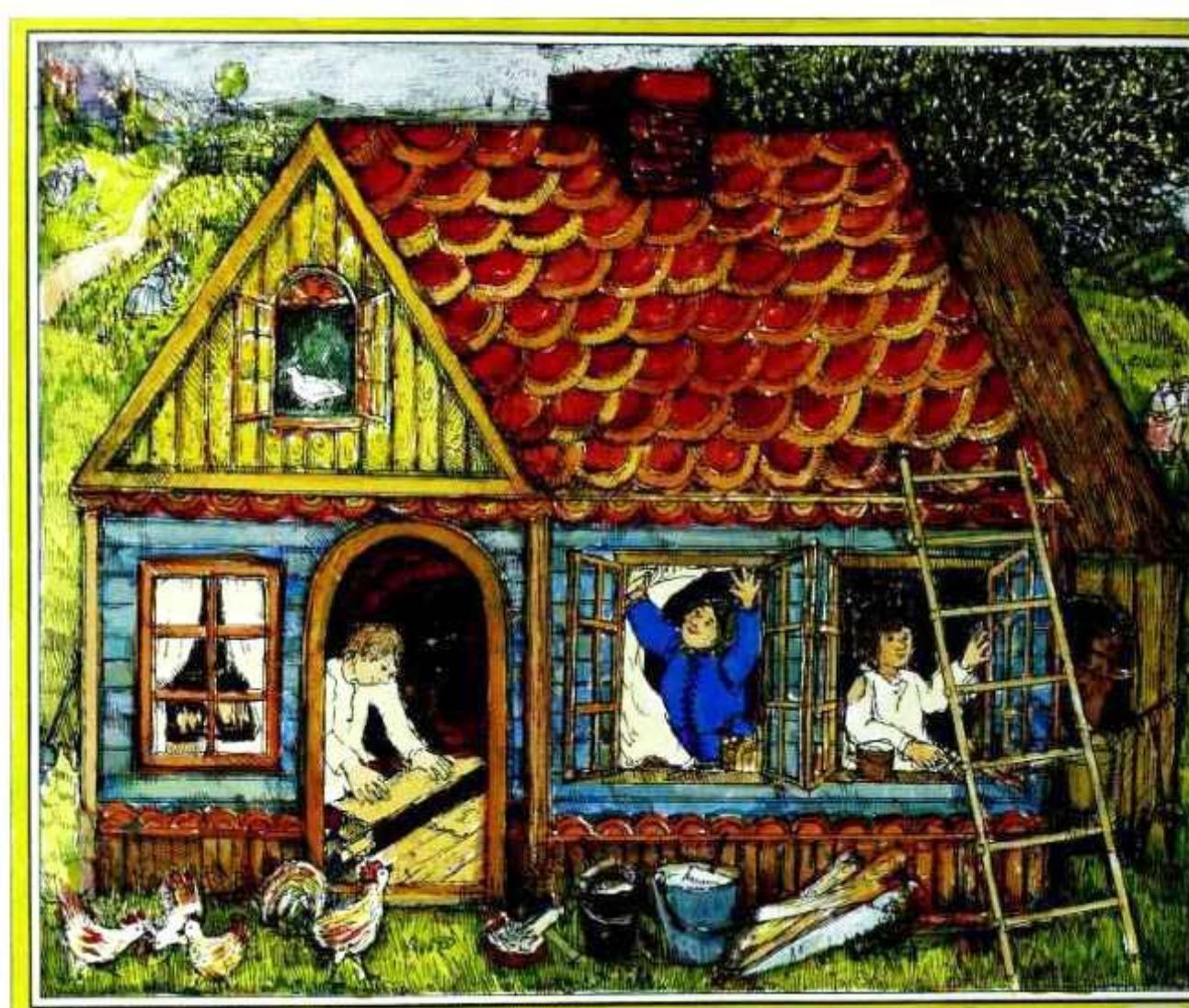
दोनों बेटों ने अपनी तलवारें और अपने मेडल्स ज़मीन में दफना दिए. उन्होंने नए आलू बोने में माँ की मदद की. उन्होंन टूटे घर को दुबारा बनाया और सभी चीजों की मरम्मत की.

लेकिन उन्होंने टूटी हुई दीवार को दुबारा नहीं बनाया.

समाप्त